Today's Poem – 13.06.2014

शरीर सहित जो कुछ भी देखने में आता है, यह सब विनाश है होना

तुम आत्माओं को अब घर लौटना, पुराने दुनिया को भूल है जाना

बेहद का बाप बेहद का वर्सा देने आया

रावण 5 विकारों की जेल से छुड़ाने आया

अपार सुखों की दुनिया में चलने के लिए संगम पर खड़ा होना

साक्षी हो सब कुछ देखते हुए बुद्धियोग नई दुनिया में लगाना

सभी को जीयदान देना

बेहद के बाप से पढ़कर दूसरों को पढ़ाना

माया का काम है आना

हमारा काम है विजय प्राप्त करना

हिम्मते बच्चे मददे बाप

मेरा बाबा

ॐ शान्ति !!!